International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 03-07-2022, Accepted: 19-07-2022, Published: 03-08-2022
Volume 8, Issue 4, 2022, Page No. 61-63

ग्राम्य कृषक–जीवन का दर्पण "मैला आँचल"

श्री कृष्ण कुमार शर्मा
उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा मद्रास स्नातकोत्तर केन्द्र, धारवाड़, कर्नाटक, भारत

सारांश
उपन्यास सम्राट प्रेमचंद जी के बाद यदि किसी उपन्यासकार का नाम लिया जाता है तो वह है श्री फणीश्वर नाथ रेणु । इनकी ख्याति मुख्यतरू ग्रामकथा लेखन और यथार्थवादी विचारधारा के होने से है । रेणु जी को विशेष तौर पर "मैला आँचल" उपन्यास की रचना के उपरांत ही ख्याति मिली । रेणु जी रचनाओं में "मैला आँचल" सबसे अलग और प्रसिद्ध रचना है । "मैला आँचल" एक आंचलिक उपन्यास है, जो कि एक गाँव के पुरे परिवेश को अपने आँचल में समेटे हुए है । खुद रेणु जी ने उपन्यास की भूमिका में कहा है–"यह है मैला आँचल, आँचलिक उपन्यास ।" आँचलिकता परक रचनाओं में रचनाकार किसी एक व्यक्ति को नहीं वरन पूरे समाज को चित्रित करने का प्रयास करता है । और इसका एक ज्वलंत उदाहरण "मैला आँचल" है । रेणु जी ने समाजिक जीवन की परिपाटी का चित्रण करने के लिए जिस गाँव को आधार बनाया है, वह गाँव भी अपने आप में आँचलिकता का प्रतिनिधित्व करता है । रेणु जी ने स्पष्ट कहा है कि, 'मेरीगंज' गाँव अपने आँचल में पिछड़े गाँव का प्रतीक है ।

मूल शब्दः जमींदारी, प्रतिनिधित्व, सामाजिकता, स्थानीय, समलिंग, आदि।

प्रस्तावना
श्री फणीश्वर नाथ रेणु जी का जन्म 4 मार्च 1921 में औराही हिंगना नामक गाँव जिला पूर्णिया बिहार में हुआ था । प्रेमचंद की भांति फणीश्वर नाथ जी की भी प्रसिद्धि ग्रामकथा लेखन और यथार्थवादी दृष्टिकोण के लिए है । प्रेमचंद बड़े कहानीकार और उपन्यासकार हैं या नहीं है, इस संबंध में आलोचकों में मतभेद है और बहुत कुछ यही स्थिति फणीश्वर नाथ रेणु जी के लिए भी है ।
लेकिन उनके आँचलिक उपन्यास "मैला आंचल" जैसी रचना पर ही उन्हें कालजई लेखक होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उनके उपन्यासों और अनेकों कथासाहित्य पर अनेकों शोध कार्य हो चुके हैं और कुछ हो रहे हैं ।
उनके इसी आँचलिक उपन्यास पर मैंने शोधपत्र तैयार किया है आशा है आप सबको पसंद आएगा।

शोध विधिः मैला आँचल की कथा कुछ इस प्रकार से है कि मेरीगंज गाँव बिहार के पूर्णिया जिले के पूर्वी आँचल का गाँव है। इस गाँव का नाम पहले महायुद्ध के बाद डब्लयू जी मार्टिन ने अपनी पत्नी मेरी के नाम पर मेरीगंज रखा था। उपन्यास की कथा सभी वर्गों की झांकी चित्र करती है । उपन्यास में एक तरफ साधनहीन किसानों का वर्ग है तो दूसरी और शोषित गरीब किसानों का वर्ग । दोनों को मध्य रखकर उपन्यास की कथा बनाई गई है । इस कथा में महत्वपूर्ण पात्र के रूप में डॉ. प्रशांत तथा बलदेव का एक अपना अलग महत्त्व है । हालाकि दोनों ही मेरीगंज गाँव के नहीं हैं । इन दोनों को गाँव की मिट्टी खींच कर लाई है । इस कारण आँचलिकता के गुण इनमें दिखाई देते हैं । आम लोगों की धारणा होती है कि गाँव में राजनीति कम होती है लेकिन सच्चा रूप तो राजनीति का गाँव में ही दिखाई देता है । मेरीगंज गाँव में राजनीति के कारण नई दृष्टि सामने आ रही है।
इसी तरह से अनेकों अनछुए पहलुओं को इस शोधपत्र के माध्यम से आप सभी तक पहुँचाने का प्रयास किया गया है ।

शोध विवरणः उपन्यास की कथा दो खंडों में विभाजित है, जो आजादी के पहले एवं आजादी के स्वागत की तैयारी से जुड़ा है । इन दोनों खंडों के साथ चरित्र चित्रण पात्रों की संख्या लगभग 200 के बराबर है ।
उपन्यास में लोक कथाओं, लोकगीतों, उत्सव आदि के वर्णन द्वारा ग्रामीण अंचल का सजीव चित्रण किया है। लेखक ने इसका उपयोग व्यक्तियों के मनोभाव के उद्घाटन मनरूस्थितियों के चित्रण समूहों के अंतर संबंधों के निरूपण के लिए बड़े सटीक ढंग से किया है।
यह संतुलन कितना अच्छा बन पड़ता है कि लेखक को अपनी ओर से कुछ कहना नहीं पड़ता। प्रसंगों परिस्थितियों और मनरूस्थितियों की नाटकीय पारस्परिकता ही सारी सुंदरता और जटिलता को ध्वनित करती चलती है । प्रस्तुत उपन्यास में पात्रों का बाहुल्य है या उपन्यास को व्यापकता देने के लिए, वह मानव के विविध रूपों की विचित्रता दिखाने के लिए योगदान देते हैं । इन सभी पात्रों में डॉ प्रशांत प्रमुख पात्र हैं । डॉक्टर प्रशांत को नेपाल सरकार से निष्कासित किया गया है उन्हें बाढ़ में तैरते हुए पाया गया था । प्रशांत में उपाध्याय परिवार के संस्कार हैं । उन्हें पटना मेडिकल कॉलेज में भारत छोड़ो आंदोलन में गिरफ्तार किया गया । प्रशांत पूर्णिया के पूर्वांचल में रहकर मलेरिया एवं काला अजार से मरने वाले लोगों की सेवा की और मेरीगंज में आकर मलेरिया का संचालक बनकर लोगों की सेवा करने लगा।
डॉ प्रशांत के अलावा गाँव में दूसरा महत्वपूर्ण पात्र बलदेव है जो चत्रनपटी का रहने वाला है । बचपन में ही माँ के मरने के बाद टूअर होकर अजोधी भगत की भैंस चराता है । भगत की बेटी रूपमती उसे दूध की छाली देती है । चत्रनपटी

में रामकिशन बाबू कांग्रेसी नेता बना । बलदेव के कांग्रेसी नेता होने के कारण गाँव के लोग उसे प्रतिष्ठा के रूप में देखने लगे । यादव टोली के मुखिया ने उसे मौसी के साथ रहने के लिए विवश किया । गाँव में बलदेव का महत्व बढ़ने लगा। राजपूत टोली के हरगवौ से या देखा नहीं गया, इस कारण उसका अपमान कर दिया । दोनों टोलियों के लोग लाठियाँ लेकर पहुँच गए । यहाँ पर रेणु जी ने गाँव में गुट बनने तथा उस गुट के खातिर कुछ भी कर गुजरने जैसी स्थिति को दर्शाने का प्रयास किया है । झगड़े एवं एक दूसरे के प्रति कूटनीति की भावना आदि को बड़े हर्ष के साथ रेणु जी ने कथा में स्थान दिया हुआ है।

कथा में दूसरा महत्वपूर्ण स्त्री पात्र ममता है, जो कथा में होकर भी न हो ऐसा प्रतीत होता है । गाँव में रोग पीड़ितों की सेवा करना, किसान, मजदूर को रोगों से मुक्त करना यह काम में लगी रहती है। एक बार डॉक्टर प्रशांत से कहा था, ओह प्रशांत तुम कितने बड़े हो, कितने महान, ममता का यह कहना खुद के लिए कितना महान साबित होता है । प्रशांत एवं ममता दोनों मिलकर काम करते हैं, ममता प्रशांत से कहती है "अस्पताल में कराहते हुए गरीब रोगियों के रुदन को जिंदगी का एकसंगीत समझ कर उसे भोग करना ही डॉक्टर का कर्तव्य नहीं । " इन संवादों से प्रतीत होता है कि रोगियों का इलाज करना मूल उद्देश्य रहा है । कथा में गौड़ स्त्री के रूप में फुलिया, सेविया, रमपरिचरिया आदि पात्र हैं । अन्य स्त्री पात्र में कमला, लक्ष्मी आदि महत्वपूर्ण पात्र हैं । कमला विश्वनाथ प्रसाद की एकलौती पुत्री है । कमला ही कहीं सगाई नहीं हुई थी, प्रशांत से मिलने से पहले होली के उत्सव में बेहोश हो गयी थी । उसी दिन से प्रशांत का उसके घर आना–जाना, प्रशांत का प्रेम जाल में फँसना, प्रशांत माटी का महादेव है कहना, आदि बात से प्रतीत होता है कि कमला एवं प्रशांत प्रेम के एक सूत्र में बंधे हैं । कमला के पिता इस संबंध को कलंक मानकर क्षोभ से भर उठते हैं । लेकिन आखिरकार कमला और प्रशांत एक–दूसरे को अपनाकर गाँव में ही रहने लगते हैं ।

एक दूसरी स्त्री पात्र लक्ष्मी है जो कोशोरावस्था में अनाथ हो गई थी । लक्ष्मी पर अधिकार पाने के लिए महतो पर मुकदमे हुए एवं सेवादास की दासीन हो जाती है । सेवादास ने वकील से कहा था कि उसे बेटी की तरह रखेगा । लक्ष्मी नादान किशोरावस्था में ही बूढ़े का शिकार हो गई थी । रोज रात में ऐसा रोना रोती थी कि पत्थर भी पिघल जाए । सब सुनने के बाद कारण पूछते तो इधर–उधर देखती रहती, ठीक गाय की बाछी की तरह जिसकी माँ मर गई हो । " सेवासदन का चेला उसे जीने नहीं देता, कई बार मरते–मरते बची हैं । कुछ दिनों बाद सेवासदन की मृत्यु हो गई । लक्ष्मी दुखी और बेसहारा हो गई तब बलदेव ने उसे सहारा और साहस दिया । बलदेव की ईमानदारी, संवेदना से प्रभावित होकर उसकी तरफ आकृष्ट हुई । उसने बलदेव पर भंडारे का प्रबंध सौंपा । बलदेव के सहारे से उसे अपनापन महसूस होता है। दोनों एक दूसरे से विरह वेदना में जलते हैं ।

बलदेव कांग्रेसी होने के नाते गांधी पर श्रद्धा रखता है । गांधी का अहिंसावादी भक्त है । आदर्शवाद से प्रभावित मेरीगंज गाँव का श्रीगणेश किया है । कालीचरण कथा का दूसरा महत्वपूर्ण पात्र रहा है । उसने गाँव में समाजवादी शाखा भी स्थित की है । यहाँ पर रेणु जी ने कालीचरण के रूप में गाँव के लोगों में होते परिवर्तन की झलक को दिखाने का प्रयास किया है। क्योंकि कालीचरण एक पात्र के रूप में वह शोषण के रूप को थोड़ा समझने लगा है ।

किसानों को सादे (कोरे) कागज पर अंगूठा देने से रोकता है । वह किसानों को अपने अधिकार तथा संघर्ष के बारे में समझाता है । हर गौरी उनका बचपन का दोस्त है, चमार टोली के साथ खाना तथा अपमान सहा नहीं जाना आदि कार्य को वह माजवादी दृष्टि से देखता है, उसे सहा भी नहीं जाता है । एक बार सैनिक जी की बीमार पत्नी ने उसे उल्लू कहा था तो उसका सिर चकरा गया था । कालीचरण स्वभाव से उग्र होने के साथ–साथ कोमल भी दिखाई देता है । दोनों तत्वों से बना कालीचरण कथा को रोचक तथा समय परिवर्तन के साथ रोचक बनाता है ।

मैला आँचल उपन्यास में पात्रों के साथ देशकाल वातावरण भी बहुत महत्वपूर्ण है । कथा में आंचलिकता के रूप में मैथिली अंचलतत्वों से भरा पड़ा दिखाई देता है । कथा में होली उत्सव सलुआनी, सिखा आदि का चित्रण रहा है । यहाँ पर लोग के अंधविश्वास का उल्लेख भी किया है, कहते हैं कि "सिंदूर लगाते समय जिस लड़की के नाक पर सिंदूर झडकर गिरता है, वह अपने पति की दुलारी होती है ।"

इस कथा में प्रकृति–चित्रण की दृष्टि देखा जाए तो फाल्गुन मास के बाद संस्कृति का उत्सव आता है जो कि इस कथा में वर्णित है । कथा में भाषा–शैली की दृष्टि से देखें तो मैथिली का प्रयोग हुआ है । मैथली के शब्द जो अनपढ़ लोगों द्वारा बोले जाते हैं । जैसे विश्वनाथ प्रसाद की नौकरानी सूचना देते हुए कहती है, "नाती भैल हो....गुजुर–गुजुर हेरे छे !" कथा की भाषा सामान्यता खड़ी बोली है जो मैथिली अंचल के लोगों द्वारा बोली जाती है । जैसे कनियाँ (दुलहिन), भरू कुबा (भोर का तारा) आदि । पात्रों के अनुसार अंग्रेजी तथा तद्भव शब्दों का प्रयोग हुआ है जैसे लालमुनिया, रिजरब आदि शब्दों के आलावा मैथिली बोली में समान ध्वनि का उपसर्ग लगाकर बोलने की है जैसे रू कर–कचहरी, मर–महाराज, फर–फौजदार आदि । उपन्यास में मुहावरों और अलंकारों का भी समावेश मिलता है ।

कुल मिलाकर "मैला आँचल" हिंदी उपन्यास के इतिहास में घटना है। भाषा और रूप विधान में नयापन तो है ही, आजादी के बाद के भारत के मिजाज को व्यक्त करने वाला यह पहला उपन्यास है– आजादी के बाद बदलते हुए गाँवों की तस्वीर और इसके बीच गाँधीवादी बाबनदास की शहादत ध्यान देने योग्य है।" नामवरसिंह का मानना है कि रेणु का आविर्भाव एक निश्चित ऐतिहासिक परिस्थिति का परिणाम है। मतलब यह है कि रेणु में किसानों या ग्रामीण जीवन का जो गहरा अनुभव है, वह उनके बीच रहकर पैदा हुआ तथा लेखकीय प्रतिभा का विकास निरंतर पढ़ने लिखने से।[६] रेणु हिन्दी के पहले बड़े कथाकार थे जिनकी जीविका का आधार कृर्षि था। वे खेती के दिनों में गाँव में रहकर एक कृषक का जीवन जीते थे और शेष समय पटना में रहकर एक लेखकीय जीवन बिताते थे। इसलिए उनके कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन के इतने विविध और प्रगाढ़ चित्र मिलते हैं।

निष्कर्ष रू श्री फणीश्वर नाथ रेणु जी के इस उपन्यास में सम्पूर्ण गाँव के हर पहलू का चित्रण बखूबी किया गया है । उपन्यास की कथा में गाँव की लोक कथाओं, लोकगीतों उत्सव आदि के वर्णन के द्वारा ग्रामीण अंचल का सजीव चित्रण किया है । लेखक ने इसका उपयोग व्यक्तियों के मनोभाव के उद्घाटन मनरूस्थितियों के चित्रण समूहों के अंतर संबंधों के निरूपण के लिए बड़े सटीक ढंग से किया है । यह संतुलन कितना अच्छा बन पड़ता है कि लेखक को अपनी ओर से

कुछ कहना नहीं पड़ता । प्रसंगों परिस्थितियों और मनरूस्थितियों की नाटकीय पारस्परिकता ही सारी सुंदरता और जटिलता को ध्वनित करती चलती है ।

रेणु जी ने स्वयं कहा है कि "मैला आँचल बहुत पैथेटिक या दुरूखात उपन्यास है, लेकिन उसमें एक प्रेम कथा भी है, उसका सुखांत हुआ है । इसका मतलब यह हुआ कि एक भरोसा है, उम्मीद है, आशा है ।" उपन्यास में अंचल के गरीब किसान, मजदूर आदि का जीता जागता चित्रण प्रस्तुत किया गया है ।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. फणीश्वर नाथ रेणु – 'मैला आँचल" 1967
2. फणीश्वर नाथ रेणु – 'मैला आँचल" पृष्ठ संख्या – 25
3. फणीश्वर नाथ रेणु – 'मैला आँचल" पृष्ठ संख्या दृ 269
4. डॉ. कुट्टे धनाजी सुभाष – "हिंदी उपन्यासों में चित्रित कृषक जीवन" पृष्ठ संख्या – 31 – 32